[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3447

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

महान संगीतज्ञ तानसेन

प्रो. सुनीता जैन
सहा. प्राध्यापक इतिहास
म.ल.ब. शा. स्ना. कन्या महा. किला भवन, इन्दौर

तानसेन एक महान संगीतज्ञ थे। अबुल फजल बादशाह अकबर के उदार संरक्षण में विभिन्न संगीतज्ञों के होने का वर्णन करता है, उनमें वह पहला स्थान संगीत सम्राट तानसेन को प्रदान करता है।। तानसेन उस युग के सर्वश्रेष्ठ प्रतिभावान संगीतज्ञ थे। तानसेन की प्रशंसा करते हुए अबुल फजल ने लिखा है '' भारत में उसके समान गायक एक सहस्त्र वर्षो से नहीं हुआ'' तानसेन का जन्म 1531–32 में ग्वालियर से लगभग 43 किलोमीटर दूर बेहट ग्राम में एक गौड़ ब्राम्हण परिवार में हुआ था। इनका प्रारंभिक नाम त्रिलोचन पांडे था, बाल्यकाल से ही उन्हें संगीत में विशेष अभिरूचि थी। ग्वालियर के नरेश मानसिंह तोमर ने ग्वालियर में एक संगीत शाला स्थापित की थी जो मुगलों द्वारा ग्वालियर पर अधिकार कर लेने के बाद भी कई वर्षो तक विद्यमान रही। तानसेन ने इसी संगीत शाला में संगीत की प्रारंभिक षिक्षा प्राप्त की थी। इन्होंने अपने ताउ बाबा रामदास के गुरू वृन्दावन के तत्कालिन प्रसिद्ध संत गायक बाबा हरिदास से संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी इसके अतिरिक्त उन्होंने मोहम्मद गौस से भी गायन विद्या सीखी तथा ईरानी संगीत का भी ज्ञान प्राप्त किया।

प्रारंभ में तानसेन ने ग्वालियर के राजा रामनिरंजनसिंह के दरबारी संगीतज्ञ के रूप में ख्याति प्राप्त की। इस समय रीवा के राजा रामचन्द्र बघेल कला और साहित्य के प्रेमी व उदार आश्रयदाता थे। तानसेन राजा रामचन्द्र बघेल के आमंत्रण पर रीवा दरबार में जाना स्वीकार कर लिया। यहा तानसेन यश, गौरव, प्रसिद्धि मिली। रामचन्द्र ने तानसेन को धन, सम्मान और पद बड़ी उदारतापूर्वक प्रदान किये थे और तानसेन उनका बड़ा कृपापात्र बन गया। वह तानसेन की संगीतकला से इतना अधिक प्रभावित और प्रसन्न हुए थे कि रामचन्द्र ने एक बार तानसेन को एक करोड़ चांदी की मुद्राओं से पुरूस्कृत किया था, संभवतः यही उसे तानसेन की उपाधि मिली ओर इसी के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

सन् 1562 में अकबर ने अपनी राजसभा को एक सांस्कृतिक केन्द्र बनाना चाहा। इसके लिए उसने तत्कालीन प्रसिद्ध संगीताचार्य तानसेन को अपने दरबार में रखना चाहा इसके लिए अकबर ने अपना दूत राजा रामचन्द्र के पास भेजकर तानसेन को अपने दरबार में बुला लिया। सन् 1562 में वह राजा रामचन्द्र से बिदा लेकर आगरा आ गया। आईने अकबरी के अनुसार अकबर की राजसभा में तानसेन का बहुत आदर सम्मान हुआ। अकबर के दरबार में बड़ा ही मधुर और सुरीला गीत सुनाया बादशाह अकबर ने प्रसन्न होकर तानसेन को अपने नवरत्नों में शामिल किया। सत्ताईस वर्षो तक तानसेन अकबर की राजसभा में रहा और मुगल साम्राज्य में सर्वोच्च गायक के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

तानसेन के धर्म के विषय में इतिहासकारों में मतैक्य नहीं है। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि बाद में उसने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया था और तानसेन मिर्जा की पदवी प्राप्त हुई थी। लेकिन कुछ इतिहासकारों का कहना है कि तानसेन हिन्दू थे ओर जीवन पर्यन्त हिन्दू ही रहें।

तानसेन हिन्दू हो या मुसलमान उन्होंने भारतीय संगीत को एक विशेष गति दी। संगीत की निपुणता ने इन्हें दरबार में सर्वोच्च श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। अकबर के दरबार में रहकर संगीत सम्राट तानसेन ने भारतीय गानविद्या को नवीन दिशा दी और संगीत कला के श्रेष्ठतम् गुणों को स्वयं में समन्वित किया। उसने बीन, तम्बूरा, गीटक, सुरना आदि विभिन्न वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया था उसने कुछ रागों में थोड़े परिवर्तन और संशोधन किए और बारह नवीन रागों को प्रचलित किया वह ध्रुपद और दीपक राग में विशिष्ट रूप में प्रवीण था तथा इन रागों का उसने अत्यधिक विकास किया।

ऐसी जनश्रुति है कि तानसेन है कि तानसेन ने पहले–पहल बादशाह अकबर के दरबार में राग कान्हड़ा को एक विशिष्ट रूप में प्रस्तुत किया था जिसको सुनकर अकबर मंत्रमुग्ध हो गया था और तभी से यह राग दरबारी कान्हड़ा कहलाया। अकबर के दरबार में प्राचीन भारतीय ध्रुपद गायन शैली के स्थान पर ख्याल गायकी का अधिक प्रचलन हो चुका था।

सम्राट अकबर के संगीतकला ज्ञान के विषय में अबुल फजल लिखता है '' अकबर को संगीत–विद्या का इतना अधिक ज्ञान था जितना कुशल गवैये को भी नहीं होगा। वह नक्कारा बजाने में अत्यन्त कुशल था''।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

ऐसे संगीत कला पारखी सम्राट के आश्रय व संरक्षण से तानसेन का संगीत आसमान की उॅचाई छूता चला गया। तानसेन के नाम पर मियां की तोड़ी और मिया मल्हार आज भी जाने–माने राग है।

सम्राट अकबर संगीत कला के बहुत उत्साही संरशक थे, तानसेन को अकबर के दरबार में अत्यधिक महत्व दिया जाता था इस कारण अन्य संगीतज्ञ तानसेन से ईर्ष्या करने लगे थे और उन्हें अकबर के दरबार से हटाने के लिए कुटिल चाल चलने लगे थे लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली।

तानसेन ने संगीत कला में ऐसी महारथ हासिल की थी कि उनकी संगीत कला के ऊपर अनेक कथाएँ प्रचलित है, कहॉ जाता है कि वे अपने संगीत द्वारा बहते हुए यमुना जल को रोक देते थे, दोपहर के समय को रात्रि में बदल देते थे, और कलियों को खिला सकते थे।

तानसेन के समकालीन अनेक प्रसिद्ध संगीतज्ञ कवि व गायक हुए है लेकिन तानसेन का कोई सानी नही। उस समय के संगीतज्ञ तानसेन का आदर करते थे। सूरदास तानसेन का घनिष्ठ मित्र था। तानसेन ने रागमाला नामक पुस्तक लिखी इस पुस्तक में उन्होंने शास्त्रीय संगीत के अनेक भेदों और संरक्षित पहलुओं को स्पष्ट किया। मियां तानसेन एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ ही नही थे अपितु उनमें कवि की प्रतिभा भी थी उसने हिन्दू देवी देवताओं, मुस्लिम संतों और पीरों तथा अपने संरक्षक राजा रामचन्द्र और बादषाह अकबर की प्रशंसा में अनेक पदों की रचना भी की। अपने गुरू हरिदास का अनुसरण करते हुए तानसेन ने भक्ति संगीत का गायन किया और इस पर रचनाएँ भी लिखी।

अधिक मदिरापान के कारण इस महान संगीतज्ञ का देहान्त 26 अप्रेल सन् 1589 को लाहौर में हो गया। शाही सम्मान से समस्त प्रमुख गायकों का एक जुलूस गाते हुए उनके शव के साथ–साथ कब्रस्तान तक गया और लाहोर में उन्हें दफना दिया गया। परंतु बाद में उनका शव ग्वालियर लाया गया और यहां मुस्लिम सूफी संत शेख मुहम्मद गौस के मकबरे के समीप पुनः दफना दिया गया। अकबर ने तानसेन की कब्र पर एक शानदार मकबरा बना दिया कालान्तर में तानसेन का यह समाधि स्थल सभी संगीतज्ञों और गायकों के लिए एक पुनीत तीर्थ स्थल बन गया। तानसेन के देहावसान के समय शोक विहल हो अकबर ने कहा था कि ''तानसेन के देहान्त से गायन की मधुरता का लोप हो गया''।

तानसेन की समाधि पर ग्वालियर में आज भी संगीतज्ञों का विशाल शानदार मेला लगता है और तानसेन समारोह मनाया जाता है।

संदर्भ –

1 *मध्यकालीन भारतीय संस्कृति – डॉ. के.एल. खुराना*
2 *अकबर – सुरेश मिश्र*
3 *मध्यकालीन भारतीय संस्कृति – दिनेशचन्द्र भारद्वाज*
4 *मुगल कालीन, भारत का राजनीतिक – बी.एन. लुनिया एवं सांस्कृतिक इतिहास (भाग–1) (सन् 1526 से 1605 तक)*
5 *भारतीय संगीत का इतिहास – राम अवतार वीर*
6 *मध्यकालीन भारतीय संस्कृति – आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव*
7 *मध्यकालीन भारत – विद्याधर महाजन*
8 *मध्ययुगीन भारत – अवधबिहारी पाण्डेय*